VISION IAS

www.visionias.in

09 SEP 2019

SUBJECT:		Test Code:	1	2	5	2
Name of Candidate	Ravi Kumar Sihag					

Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1	6	8	1	1	7
Center	MN	Date	0	9	0	9	1	9

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

1/8-B, 2nd Floor, Building- Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

हजारों मील के सफ़र की शुरुआत, एक छोटे कदम से होती है।

"इस पथ का उद्देश्य नहीं है
शांत भवन में टिक रहना
बल्कि पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं।"
(महादेवी वर्मा)

विगत 3-4 वर्षों पहले अमेरिका के मुख्य अखबार में व्यंग्यात्मक खबर छपी। मुख्य मुद्दा था कि ~~भारते~~ भारत ने अपने मंगल मिशन का प्रक्षेपण किया था। खबर के साथ एक कार्टून था जिसमें भारत को अपना कोई उपग्रह बैलगाड़ी पर लेकर जाते हुए दिखाया गया था। विरोध हुआ, भारतीयों ने जमकर आलोचना की। किन्तु, यह भी सच था कि भारत के अंतरिक्ष मिशनों की शुरुआत इसी प्रकार हुई थी। भारत ने अपने उपग्रहों को लॉन्चिंग पैड तक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ले जाने के लिये साइकिल तक का सहारा लिया था। और आज वही भारत है जो अपने प्रथम प्रयास में ही मंगल की उड़ान पूरी कर चुका है, चांद पर दो मिशन भेज चुका है, सबसे लागत प्रभावी स्पेस बाजार के रूप में विश्व विख्यात है। किसकी बदौलत यह सब हुआ? शायद विक्रम साराभाई और जहाँगीर होमी भाभा जैसे वैज्ञानिकों के सपने की बदौलत या इसरो की स्थापना करने का कदम वह निर्णय था जो भारत की इस हजारों मील की यात्रा का प्रस्थान बिन्दु बना।

उपर्युक्त विवेचन करने का अभिप्राय यह है कि कोई भी उपलब्धि, कोई भी यात्रा, कोई भी परिणाम स्वयंसिद्ध नहीं होता है, उसकी पूर्णता के लिये आवश्यक होता है एक साहसिक कदम, ऐसा कदम जो भविष्य के लक्ष्य का मार्ग प्रशस्त करता है; यात्री का मनोबल बढ़ाता है और उसे ले जाता है मंजिल की ओर।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसा कि एक शायर ने कहा है -

"चलता रहूँगा पथ पर यूँ ही
चलना तो सीख ही जाऊँगा
मंज़िल मिली तो ठीक नहीं,
अच्छा मुसाफिर तो बन जाऊँगा।"

विस्तृत देशकाल का विवेचन करने पर हजारों लाखों उदाहरण मिलेंगे जो हजारों मील के सफर में एक कदम की भूमिका को स्पष्ट करेंगे। विश्व इतिहास के पुनर्जागरण काल में भारत व अमेरिका की खोज न होती अगर कोलम्बस और वास्को-डी-गामा जैसे नाविक कदम न उठाते। कोट-पेन्ट पहनने वाला बैरिस्टर अपना सूट-बूट त्यागकर 'महात्मा' न बनता यदि वह अन्याय को चुपचाप सहन कर लेता या यथास्थिति बनाये रखता। स्पष्ट है कि हजारों वर्षों के इतिहास में जितने भी परिवर्तन, क्रान्तियाँ, बदलाव हुए हैं वे एक दृढ-निश्चय से युक्त कदम का बदलाव है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

'निदा फाजली' जैसे शायर ने जिंदगी को समझने के लिये भी घर से निकलने का साहसिक कदम उठाने की सलाह दी है-

"धूप में निकलकर देखो, घटाओं में नहाकर देखो, जिंदगी क्या है, किताबों को हटाकर देखो।"

छोटे कदम की छोटी शुरूआत से हजारों मील के सफर का उदाहरण जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम मानसिक स्तर पर

प्रारंभ में हर व्यक्ति जड़ होता है, किसी बड़े काम के लिये स्वयं को असमर्थ समझता है किन्तु वही व्यक्ति जब साहस व दृढ़ता से पैर आगे बढ़ाता है तो युग पलट देता है। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, उसका बौद्धिक विकास होता है; मानसिक आयाम खुलते हैं; मस्तिष्क का क्षितिज विस्तृत होता है और मार्ग पर आगे बढ़ने का साहस बढ़ता जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'दशरथ मांझी' जैसा व्यक्ति पहाड़ नहीं तोड़ पाता यदि फावड़ा उठाने का कदम न उठाया होता। 'न्यूटन' आज विश्व के भौतिक विज्ञान में अतुलनीय योगदान न दे पाता यदि सेव के गिरने पर प्रश्न न उठाता।

इसी प्रकार सामाजिक सुधारों व प्रगति के स्तर पर सभी उपलब्धियाँ छोटे कदमों का परिणाम हैं। अमेरिका में अश्वेतों को समान दर्जा दिलाने में 'रोजा पार्क्स' जैसी महिला का मोंटगोमेरी से अलबामा जाने वाली बस में बैठने का कदम हो या आधुनिकता के आगमन के लिये ब्रूनो का मृत्यु को प्राप्त होना; भारत में दलित उत्थान के लिये अंबेडकर का आगमन हो या पश्चिम में नारी-मुक्ति के लिये जे. एस. मिल, मैरी वॉलस्टनक्राफ्ट, सिमोन द बोउवा जैसे व्यक्तित्व - सभी उन प्रारंभिक कदमों के परिचायक हैं जो आज के

मानवाधिकारों, समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय के युग में हम सांस ले पा रहे हैं। उन कदमों का परिणाम ही है कि जहां 'मनुस्मृति' में नारी को पुरुष की अधीनस्थ माना जाता था, वहीं आधुनिक युग के 'सुमित्रानंदन पंत' जैसे कवि ने लिखा है-

"योनि नहीं है रे नारी,
वह भी मानवी प्रतिष्ठित,
उसे तुम स्वतंत्र करो,
वह रहे न नर पर अवसित।"

राजनीतिक क्षेत्र में भी भारत का संविधान जो कि विश्व का दीर्घतम संविधान है, अपना संपूर्ण दर्शन छोटी से 'प्रस्तावना' से प्राप्त करता है जो कि संविधान निर्माताओं का प्रारंभिक कदम था। इसी प्रकार आज के लोकतांत्रिक समाज के बीज इंग्लैण्ड की गौरवमयी क्रान्ति, अमेरिका व फ्रांस की क्रान्ति में खोजे जा सकते हैं। आज का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोक-कल्याणकारी राज्य कार्ल मार्क्स की 'दास कैपिटल' का ऋणी है जिसने पूंजी-पति समाजों को सर्वहारा कल्याण के बारे में सोचने पर मजबूर किया। रूसो, जे. एस. मिल, हॉब्स, बेंथम उन प्रारंभिक दार्शनिकों में आते हैं जिन्होंने आज के लोकतंत्र, उदारवाद, मानवाधिकार की नींव डाली है।

इसी प्रकार आर्थिक स्तर पर यदि जॉर्ज स्टीवेन्सन व जेम्स वाट जैसे वैज्ञानिक भाप के इंजन का आविष्कार नहीं करते, यदि गैलेलियो, न्यूटन, आइन्स्टीन अपने सिद्धान्त प्रेषित नहीं करते तो आज की वैज्ञानिक यात्रा अधूरी थी, आज जो चतुर्थ औद्योगिक क्रान्ति का स्वप्न हम देख रहे हैं - वह शायद किसी की कल्पना में भी न होता। आज के अंतरिक्ष बाजार में अंतरिक्ष पर्यटन की परिकल्पना अधूरी होती यदि 'इलोन मस्क' जैसे उद्यमी असफलता

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

के बाद एक रात में ही पुनः प्रयास करने का कदम न उठाते। हिन्दी के प्रसिद्ध गजलकार इसी प्रवृत्ति पर लिखते हैं -

"कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं होता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।"

विभिन्न सभ्यताओं की सांस्कृतिक यात्रा पर चर्चा करें तो भी यही बात निकलकर आती है कि संस्कृति के स्तर का प्रत्येक उच्चतर सत्य तभी प्राप्त हुआ है जब उसके लिये कोई कदम उठाया गया है। भारतीय संस्कृति में अहिंसा जैसे मूल्यों का समावेशन जैन व बौद्ध धर्म के आगमन से हुआ है; सांस्कृतिक सहिष्णुता व समन्वय का तत्व वहाँ शुरू हुआ है जहाँ उपनिषदों के ऋषि प्रत्येक दिशाओं से ज्ञान प्राप्ति का आह्वान करते हैं -
"आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः।"

इसी क्रम में भारत की गंगा -

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जमनी तहज़ीब के विकसित होने में सूफी सन्तों, भारतीय उदारवादी विद्वानों की प्रमुख भूमिका रही। मध्यकाल में भी आदर्शों के प्रक्षेपण में 'तुलसीदास' का 'रामचरितमानस' वह प्रस्थान बिंदु माना जाता है जिसने आज तक पारिवारिक आदर्शों को बनाये रखने में अपनी भूमिका निभाई है। सांस्कृतिक गत्यात्मकता व निरंतरता बनाये रखने में भी संस्कृत की प्राचीन सूक्तियों जैसे - चैरयति चैरयति (चलते रहो, चलते रहो) प्रारंभिक कदम मानी जा सकती है।

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों व स्तरों के अलावा अन्य स्तरों जैसे पर्यावरण के क्षेत्र में आज के पेरिस जलवायु समझौते जैसी उपलब्धियाँ प्राचीन भारतीय उपनिषदों, महात्मा गांधी, भारत के अद्वैवेदांत दर्शन के साथ - साथ पश्चिमी पर्यावरणवादी विचारकों की ऋणी हैं क्योंकि इनके बिना उपर्युक्त

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समझौते की रूपरेखा के साथ-साथ मोंट्रियल समझौते की सफलता की पटकथा न लिखी जाती। आज के पर्यावरणवाद के पहले भारतीय ग्रन्थों में वृक्षों की महिमा का बखान कर दिया गया था -

"सेवितव्यो महावृक्षा फलच्छाया समन्वितः।
येन फलं न ददाति, छाया केन निवार्यते।"

अन्त में शिक्षा के आज के सफर में भारत के नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्व-विद्यालय प्रारंभिक कदम थे तो आज का दर्शन विज्ञान अपने चरम स्तर में सुकरात के बलिदान का ऋणी है, जिन्होंने सिद्धान्तों की रक्षा हेतु जान दे दी। आज की विश्व राजनीति संस्कृत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' या बुद्ध के 'पंचशील सिद्धान्तों' की ऋणी है, जिसके कारण आज अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में भी नैतिकता की चर्चा की जाती है।

चर्चा का अंतिम पक्ष है कि किस प्रकार एक छोटा कदम हजारों

मील के सफर का गवाह बन जाता है। दरअसल एक छोटा कदम तो एक प्रेरणादायक शुरुआत ही होती है जो चलने का साहस प्रदान करती है, मार्ग पर प्रकाश डालती है। कदम बढ़ाने के साथ-साथ दृढ़ता, साहस, धैर्य, सत्यनिष्ठा, आलस्यहीनता जैसे गुण होने चाहिये जो इस कदम को लंबी छलांग में रूपान्तरित कर सकते है। ऐसे मूल्यों युक्त व्यक्ति ही वक्त के ढांचे बदल पाते हैं। जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

"नर हो निराश न करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो।"

इस प्रकार उपर्युक्त संपूर्ण चर्चा से इस कथन को साबित किया जा सकता है कि एक छोटा कदम लंबे सफर का शुरुआती रूप होता है। आज के समय में विद्यमान चुनौतियों - जैसे- आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, हिंसा, घृणा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का फैलाव आदि को रोकने के लिये भी विश्व को एकजुट होकर कदम उठाने की ज़रूरत है; साथ ही इन कदमों पर अथक, अविराम व लगातार चलने की भी ज़रूरत है ताकि मंजिल के पास जाया जा सके। इस उद्यमशीलता के साथ-साथ यात्रा के मूल्यों का समावेशन भी आवश्यक है ताकि देश, राज्य, समाज व व्यक्ति में युगांतरकारी परिवर्तन किये जा सकें। जैसा कि 'दुष्यंत कुमार' अपनी ग़ज़ल में लिखते हैं:-

"हो चुकी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिये
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये
मेरे दिल में न सही, तेरे दिल में ही सही
हो कहीं भी आग पर अब आग जलनी चाहिये।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'सामाजिक परिवर्तन के एक घटक (अभिकर्ता) के रूप में खेल।'

"अरे बापू सेहत के लिये तू तो हानिकारक है।"

दंगल फिल्म, जो अनेक फिल्मी अवॉर्ड जीत चुकी है, का यह गाना स्वयं में विरोधाभासी प्रतीत नहीं होता। छोटी बालिकाएँ गीता और बबीता अपने पिता के दैनिक शारीरिक व्यायाम के अनुशासन से तंग आकर यह गाना गाती हैं। नन्हीं, कोमल बालिकाएँ शायद इतनी दूरदृष्टि युक्त नहीं होती कि अपने पिता के इरादों को पहचान सके। बड़े होकर राष्ट्रीय स्तर के अनेक मैडल जीतने के बाद उन्हें पता चलता है कि जिस बापू को वे हानिकारक समझ रही थी, उसके जितना लाभदायक कोई भी नहीं भी था। यहाँ केवल सेहत का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लाभ ही नहीं था बल्कि अन्य भी अनेक लाभ विद्यमान थे। इसी परिप्रेक्ष्य में खेल के महत्व को सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में देखना आवश्यक होगा। खेल किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्त्ता है? सामाजिक परिवर्तन के लिये खेल में क्या आवश्यक तत्व होने चाहिये? क्या खेल समाज के स्तर पर तनाव भी पैदा कर सकता है? उपर्युक्त प्रश्नों की चर्चा करना आवश्यक होगा।

सामाजिक परिवर्तन के ~~रूप~~ अभिकर्त्ता के रूप में खेल की भूमिका का आकलन करें तो खेलों का इतिहास अत्यन्त पुराना है। आदिमानव जब जंगलों में जानवरों का शिकार करता था तो यह भी एक प्रकार का खेल ही था जिसमें चुस्ती, शारीरिक चपलता, एकाग्रता, साहस, दृढ़ता जैसे गुणों का प्रदर्शन होता था। रोम साम्राज्य में भी कोलोजियम का निर्माण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कर उसमें खेलों जैसे मल्लयुद्ध, तलवारों द्वारा शक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया जाता था। भारत में भी प्राचीन समय में घुड़-दौड़ (वाजपेय यज्ञ में), जल क्रीडा, शिकार आदि खेलों का आयोजन किया जाता था। यही इतिहास आज के युग में ओलम्पिक, विश्वकप आदि में पर्यवसित हो गया है।

दरअसल, किसी भी खेल में कुछ मूल्य होते हैं जिनमें से उचितता (fairness), सत्यनिष्ठा, जिम्मेदारी एवं सम्मान प्रमुख है। निष्पक्ष एवं नैतिक खेल से इन मूल्यों का विकास होता है। साथ ही खेल से व्यक्ति में संगठन क्षमता, नेतृत्व क्षमता, साहस, टीम स्पिरिट, सहिष्णुता, सहनशीलता जैसे गुणों का भी विकास होता है क्योंकि खेल के समय विपरीत परि-स्थितियों में साहसपूर्वक खेलना पड़ता है, टीम में सामंजस्य बैठाना पड़ता है, कप्तान के रूप में नेतृत्व करना होता है तो

अलग-अलग क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति, लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना होता है। शारीरिक विकास के साथ स्वस्थ शरीर से निर्मित स्वस्थ मन व मस्तिष्क में उपर्युक्त गुण मिलकर एक अच्छे खिलाड़ी का निर्माण होता है। यह खिलाड़ी जब समाज से रू-ब-रू होता है तो समाज इसके व्यक्तित्व का अनुसरण करता है। इस अनुसरण की प्रक्रिया, मूल्यों के स्थानान्तरण, अभिवृत्ति के प्रेक्षणात्मक अधिगम (observational conditioning) से परिवर्तन अवश्यंभावी हो जाता है। महेन्द्र सिंह धोनी, सचिन तेंदुलकर, एम.सी. मैरीकॉम, रोजर फेडरर, केन विलियमसन जैसे खिलाड़ी समाज के लिये प्रेरणादायक व अनुकरणीय हैं। इसी व्यक्तित्व पक्ष के संबंध में प्लेटो ने कहा भी है-

"आप किसी व्यक्ति के बारे में एक साल के वार्तालाप के बजाय एक घंटे के खेल में अधिक

जान सकते हैं।"

एक प्राचीन कहावत है - "खेलोगे कूदोगे तो हो जाओगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब।" दरअसल इस कहावत में पूर्वाग्रह की बू आती है क्योंकि इस कहावत को बनाने वाले ने शायद खेलों की महत्ता नहीं समझी होगी, जो समाज में अनेक स्तरों पर अपना योगदान देती है।

लैंगिक भेदभाव मिटाने में खेल की भूमिका अत्यन्त उच्च है। हरियाणा राज्य जिसका लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों में 900 महिलाओं से भी कम है, में गीता, बबीता जैसी बेटियाँ सामाजिक पूर्वाग्रहों पर कटाक्ष करती हुई सी प्रतीत होती है। इसी प्रकार दंगल फिल्म का डायलॉग - 'म्हारी छोरियाँ छोरों से कम है के' भी पुरुष-नारी समता की उद्भावना करता है। इसके साथ-साथ ये महिला खिलाड़ी अन्य

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

महिलाओं के संबंध में एक रोल मॉडल भी बन जाती है जैसे सायना नेहवाल, पी.वी. सिन्धु आदि। एक विडंबना ही है कि पितृसत्तात्मकता व पुरुष प्रधान देश भारत की ओलम्पिक खेलों में प्रतिष्ठा दो महिला खिलाड़ियों ने ही ओलम्पिक मेडल जीतकर रखी।

जातिगत पूर्वाग्रहों को मिटाने में भी खेल अद्वितीय भूमिका निभाता है क्योंकि किसी भी टीम में खिलाड़ी का चयन उसकी योग्यता के आधार पर होता है, न कि जाति के आधार पर। दूसरे स्तर पर यह खिलाड़ियों के मेल जोल द्वारा जाति संबंधी पूर्वाग्रहों को भी मिटाने का काम करता है। भारतीय क्रिकेट टीम भारतीयता की भावना से खेलती है, न कि किसी जाति की भावना से।

खेल धर्मनिरपेक्षता व धार्मिक सहिष्णुता की भावना का पिष्ट पोषण करते हैं

क्योंकि जाति की तरह ही धर्म की भूम भी योग्यता में कोई भूमिका नहीं होती है। आज के भारतीय दर्शक के लिये युवराज सिंह, जहीर खान एवं सौरभ गांगुली में कोई भेद नहीं है। ये दर्शक हर खिलाड़ी से धर्म-तटस्थ होकर प्रेम करते हैं।

इसी प्रकार खेल-क्षेत्रवाद, भाषावाद व नृजातीयता के विभेदों को हटाकर एक राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय अवॉर्ड जीत चुकी फिल्म 'चक दे इंडिया' की टीम का कोच 'कबीर खान' खिलाड़ियों का परिचय तब तक बार-बार पूछता है, जब तक वे अपने नाम के आगे 'इंडिया' नहीं लगा लेते। ~~इसी प्रकार~~

इसी प्रकार पश्चिम में रंगभेद को खत्म करने में बॉस्केट बॉल, फुटबॉल जैसे खेलों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है। हालिया फीफा विश्वकप विजेता टीम फ्रांस की टीम में बहुसंख्यक अश्वेत खिलाड़ियों का होना इसका प्रमाण है।

तो क्या उपर्युक्त चर्चा के द्वारा कहा जा सकता है कि खेल प्रत्येक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में सक्रिय भूमिका निभाते हैं या फिर चर्चा का अन्य पक्ष भी है?

दरअसल, किसी भी खेल के साथ उसकी एक खेल नैतिकता भी होती है जो उस खेल के समस्त हितधारकों के साथ जुड़ी रहती है। उदाहरण के लिये 'डॉन्ट हिट बिलो द बेल्ट' जैसे मुहावरे खेल में नियम का पालन करने की प्रतिबद्धता को व्यक्त करते है। साथ ही प्रत्येक खिलाड़ी के साथ-साथ कोच, प्रबंधक व दर्शकों के भी कर्त्तव्य होते हैं, जिनका पालन किया जाना चाहिये।

इनका पालन न किये जाने की स्थिति में खेल व खिलाड़ी समाज को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित कर सकते हैं।

हाल ही में हार्दिक पांड्या व लोकेश राहुल द्वारा टी.वी. शो में महिला विरोधी टिप्पणी किया जाना; फुटबॉल के खिलाड़ियों जैसे रोनाल्डो आदि पर आरोप लगाया जाना (महिलाओं द्वारा), मैच फिक्सिंग व बॉल टैंपरिंग (क्रिकेट) के मुद्दे एवं फुटबॉल में अश्वेत खिलाड़ियों पर नस्लीय टिप्पणी करने वाले मुद्दे समाज में अस्थिरता उत्पन्न करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर डोपिंग, अनैतिक व्यवहार, नियमों का पालन न किया जाना भी विश्व के विभिन्न देशों के मध्य घृणा जैसे तत्वों को उत्पन्न करते हैं। ये सभी मुद्दे खेलों में नैतिकता के ह्रास का परिणाम है।

ऊपर के संपूर्ण विश्लेषण को यदि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सार रूप में प्रस्तुत करना हो तो यही कहा जा सकता है कि मूलतः खेल की संकल्पना शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने, मूल्यों का विकास करने आदि की क्रियाओं से जुड़ी हुई है। किन्तु, खेल के साथ एक दूसरी शर्त भी जुड़ी हुई है 'खेल नैतिकता'। खेल केवल खेल भावना (sportsmanship) के द्वारा खेला जाना चाहिये, जीत की भावना (Gamesmanship) के साथ नहीं। इसके साथ-साथ खेल के समस्त हितधारकों को खेल नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाना चाहिये जैसे खेल के विवाद खेल मैदान तक रहें; जीत का श्रेय टीम को देना; हार की जिम्मेदारी लेना; विपक्षी टीम के प्रति सम्मान रखना; दर्शकों के प्रति जिम्मेदारी रखना आदि।

इसके साथ-साथ हालिया समय में जुड़े नये मुद्दों को भी खेल

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

नैतिकता में शामिल करना चाहिये जैसे - एडवेंचर खेलों (माउंटेन क्लाइमिंग, राफ्टिंग) आदि के द्वारा पर्यावरणीय क्षति को रोकना; 'पशु-अधिकारों' का सम्मान करना, जैसे - स्पेन का बुलफाइटिंग व तमिलनाडु के 'जलीकट्टू' जैसे खेल आदि।

अतः उपर्युक्त सभी तत्वों को ध्यान में रखकर खेला गया खेल न केवल सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनेगा बल्कि 'सतत विकास लक्ष्यों' की प्राप्ति में भी मदद करेगा, जैसे - पर्यावरणीय नैतिकता को शामिल करके, शैल कंपनी द्वारा फुटबॉल खिलाड़ियों के जूतों से ऊर्जा उत्पादन की संकल्पना आदि। परन्तु अंतिम रूप से शर्त यही रहे कि खेल नियमों की पूर्णतः पालना की जाये। जैसा कि 'अल्बर्ट आईंस्टीन' ने कहा है -

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"किसी भी खेल को जीतने के लिये ज़रूरी है कि उसके नियमों को पूरी तरह जाना जाए व पालन किया जाये।"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

" नर हो निराश न करो मन को
कुछ काम करो कुछ काम करो।"

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- मीलों हम आ गये हैं
- इस पथ का उद्देश्य नहीं है

→ चलता रहूँगा यूँ ही
~~मंजिल तो कभी पा ही~~
चलता तो जीवन ही जाऊँगा
मंजिल

घर से निकलकर देखो
किताबों से हटाकर देखो
जिंदगी क्या है
किताबों को हटाकर देखो।

1. Social change
2. Women #metoo
3. Me हूँ
4. सुन्दरा
5. Nota का concept → अस्वीकार करने का अधिकार
6. लोकतंत्र → demo, H.R., Animal, Env. ...

1. प्रस्तावना - संविधान
2. इलीक मलक
3. धीरूभाई अंबानी
4. अमिताभ बच्चन
5. स्टीलिंग निनल
6. अब्राहम लिंकन
7. M गांधी
8. मिल्खा सिंह
9. रोजा पार्क्स
10.

Social, Political, "औपचारिक मुक्ति" ⇓ cultural, "Dam" "दशरथ मांझी" ↓ Geographical, Legal → इसरो; अम्बेडकर, सुन्दरा, हूँ #Nota

Psychological, औद्योगिक क्रान्ति (economic) बल्ब, न्यूटन सेब गिरा (वैज्ञानिक) (न्यूटन), "साइकिल (डेलागांड)"

शब्दमाला

" कुछ लोग हैं जो वक्त के सांचे में ढल गए
कुछ लोग हैं जो वक्त के सांचे बदल गए।"

" चरैवेति चरैवेति"

→ कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो
→ उद्यमेन ही सिद्ध्यन्ति
→ "जलाने वाले तो जलाते ही हैं चिराग आखिर"

film → 'महेन्द्र सिंह धोनी'
→ साहित्य

→ हिचकिचाहट (मन के हार)
- बौद्धिक विकास
- 'मानसिक यात्रा'
→ 'कवि'

'मानसिक निर्णय"

→ "जीवन की विकासयात्रा"

Last = अल्बर्ट आंइस्टीन + स्पोर्ट्स(के) स्पिरिट

ओलम्पिक — खेल — Constitution

सामाजिक परिवर्तन

- लैंगिक) → ओलम्पिक, हरियाणा (बापू और
- जाति पूर्वाग्रह) → → म्हारी छोरियाँ छोरों से कम है के)
- धर्म) → → मेरी कॉम / वोमेन कोलोसियम
- क्षेत्र) → → बांग ला, मार्शल आर्ट
- भाषा) → → "चक दे इंडिया"
- एल.जी.बी.टी.

Sports ethics → FIRR

fairness
Integrity
Responsibility
respect.

- स्लेजिंग
- फिक्सिंग
-

"दर्शकों का perspective"

- चक दे इंडिया
- 'मिल्खा सिंह'

विवाद

- (*) हार्दिक पांड्या मैटर
- दर्शकों का विरोध
- जिदान का सिर मारना

- "Health aspect"
- "Psychological Aspect"
- "स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ शरीर से"

"बापू सेहत के लिये रे तू तो हानिकारक है"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)